



E-ISSN: 2706-8927

P-ISSN: 2706-8919

Impact Factor: RJIF 5.12

IJAAS 2020; 2(2): 112-114

Received: 15-02-2020

Accepted: 20-03-2020

**दिलीप कुमार**

शोधार्थी, यूजीसी नेट उत्तीर्ण,  
हिंदी विभाग, ल0 ना0 मिथिला  
वि0 वि0, दरभंगा, बिहार, भारत

## सकल राष्ट्रीय सुख व्यवस्था को क्रियान्वित करने में पत्रकारिता (मीडिया) की महत्ता

**दिलीप कुमार****सारांश**

मानव जीवन का उद्देश्य आरंभ से ही सुख की प्राप्ति रहा है। पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत से ही धर्म, कला, संस्कृति, साहित्य, दर्शन, संगीत आदि सभी का लक्ष्य मानव जीवन को खुशहाल बनाना रहा है न कि सिर्फ धन कमाना। पत्रकारिता, साहित्य का अंग है। पत्रकारिता (मीडिया) द्वारा जीवन के विविध रूपों से रू-ब-रू हुआ जाता है। वर्तमान में सकल राष्ट्रीय सुख भूटान द्वारा पूरी दुनिया को दी गई एक नयी अवधारणा है जो सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) या सकल राष्ट्रीय उत्पाद को प्रतिस्थापित कर बनाया गया है। भूटान ने इस नयी व्यवस्था द्वारा पूरे विश्व में हलचल मचा दी है। इस विषय पर निरंतर शोध, सेमिनार, आंदोलन आदि हो रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा इस सुख या खुशी की महत्ता को देखते हुए 20 मार्च को अन्तरराष्ट्रीय खुशी दिवस घोषित किया गया है। जीवन में कई कार्यों को कर खुशी प्राप्ति की जा सकती है। सकल राष्ट्रीय सुख का खुशी के विभिन्न तथ्यों को पत्रकारिता (मीडिया) द्वारा रोचक ढंग से प्रस्तुत कर, जीवन चर्या को व्यवस्थित कर, प्रेरक पुस्तकों का अध्ययन कर खुशहाली का संचार किया जा सकता है। जीवन को खुशहाल बनाया जा सकता है।

**प्रस्तावना**

सकल राष्ट्रीय सुख भूटान सरकार द्वारा प्रतिपादित विकास की नयी व्यवस्था है जो सकल राष्ट्रीय उत्पाद या सकल घरेलू उत्पाद व्यवस्था को परिवर्तित कर समग्र सुख पर आधारित है। सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) व्यवस्था धन या अर्थ पर आधारित है। सकल राष्ट्रीय सुख या सकल घरेलू सुख जीवन में सुख को महत्व देती है। जीवन में धन से महत्वपूर्ण सुख है। सुख के लिए धन (प्रति व्यक्ति आय) के अतिरिक्त अन्य आयाम स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोवैज्ञानिक तंदुरुस्ती, सामाजिकता, पर्यावरण, संस्कृति, समय-सदुपयोग, सुशासन भी महत्वपूर्ण है। सकल राष्ट्रीय सुख के अंतर्गत कुल 9 आयाम हैं। यह व्यवस्था (ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस या जीएनएच) जीवन में सुख को प्राथमिकता देती है। सकल राष्ट्रीय सुख एक नवाचार है। पत्रकारिता (मीडिया) द्वारा किसी बात को रोचकता व महत्ता देकर, उस बात को पूरे देश तथा विश्व में जनसंचारित व जनप्रसारित कर प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान समय में सभी को संतुष्ट कर सकल राष्ट्रीय सुख की व्यवस्था को विश्व में क्रियान्वित करने में महत्वपूर्ण व उपयोगी भूमिक निभायी जा सकती है क्योंकि पत्रकारिता (मीडिया) परिवर्तन की अग्रदूतिका है, इसकी महत्ता जगजाहिर है।

पत्रकारिता समाज में उत्प्रेरक, क्रांतिकारी, मार्गनिर्देशक, राष्ट्रगुरु की भूमिका अदा कर देश को नई दिशा प्रदान करती है। वर्तमान समय में शोधों द्वारा स्पष्ट हो चुका है कि पैसे के अतिरिक्त जीवन में अन्य पक्षों का संतुलन भी आवश्यक है। सिर्फ पैसे की भूख को पूरा कर आदमी सुखी नहीं रह सकता है। उसके लिए मनोवैज्ञानिक व शारीरिक स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक सरोकार, संस्कृति, पर्यावरण, समय-सदुपयोग, तथा सरकार का सुशासन भी उतना ही महत्वपूर्ण पक्ष है। आर्थिक विकास के साथ-साथ अन्य विकास भी जरूरी है, तभी हम सुखी रह सकते हैं। देश के विकास का सही मापक सकल राष्ट्रीय उत्पाद या सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की जगह सकल राष्ट्रीय सुख या सकल घरेलू सुख ही हो सकता है। इसमें आर्थिक विकास के अतिरिक्त अन्य पक्षों का विकास भी समाहित है। पत्रकारिता (मीडिया) द्वारा ही सकल राष्ट्रीय सुख व्यवस्था को लगातार प्रभावी तथा रोचक ढंग से प्रस्तुत कर विश्व में क्रियान्वित करने में सहयोग मिल सकता है।

पत्रकारिता जन-जागरण में दिशा-निर्धारण का कार्य करती है। यह एक मिशन है जिसके द्वारा जन-मानस की भावनाओं की अभिव्यक्ति की जाती है। साहित्य समाज का दर्पण है अर्थात् यह समाज में होने वाली हर गतिविधियों को प्रतिबिंबित करता है। ठीक वैसे ही पत्रकारिता जीवन के हर पहलुओं को सजगतापूर्वक अध्ययन कर उजागर करती है। मानव-जीवन का उद्देश्य अन्ततोगत्वा सुख की प्राप्ति करना ही है। धर्म, दर्शन, साहित्य, संगीत आदि, सबका एक ही लक्ष्य रहा है- जीवन को खुशहाल बनाना, इंसान को खुशियां देना। अतः जनमानस के दुःख, दर्द और की

**Corresponding Author:****दिलीप कुमार**

शोधार्थी, यूजीसी नेट उत्तीर्ण,  
हिंदी विभाग, ल0 ना0 मिथिला  
वि0 वि0, दरभंगा, बिहार, भारत

अभिव्यक्ति कर सुख को तलाशने में पत्रकारिता की भूमिका महत्वपूर्ण कही जा सकती है।

आज की तनाव भरी जिंदगी को आनंदयुक्त, प्रसन्नतायुक्त कर खुशहाल समाज तथा राष्ट्र का निर्माण करने में महत्वपूर्ण योगदान, पत्रकारिता द्वारा संभव है। पत्रकारिता में वह शक्ति है जो समाज में उपर्युक्त मार्ग प्रशस्त कर समाज में अमन-चैन की जिंदगी ला सकती है। यह समाज में उपयुक्त वातावरण तैयार कर अधिकतम सुख-समृद्धि लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

हमारे सारे कर्मों, दायित्वों के मूल में एक लक्ष्य छिपा होता है वह है आनंद प्राप्ति। आनंद की अनुभूति के अनेक अवसर हैं। जब हम सहजता पा लेते हैं तो खुशी उसका एक कुदरती परिणाम होती है किन्तु आज की भागम-भाग जिंदगी में मनुष्य जितना भौतिक सुखों के पीछे भाग रहा है, स्थायी सुख व शांति उससे उसी अनुपात में पीछे छूट रहे हैं। आज मनुष्य के लिए खुशियों के आशियानों की तलाश और उसकी प्राप्ति किसी सब्जबाग से कम नहीं है। वास्तव में सुख बाहर तलाशने की वस्तु नहीं बल्कि हमारी जीवन शैली और प्रकृति से जुड़ा अनुभूतिजन्य भाव है।

सुख की तलाश मनुष्य के जीवन की मूल प्रेरणा है। मनुष्य के सभी कार्यों के पीछे का ध्येय सुख की प्राप्ति ही है। इसी के अनुरूप वर्तमान में दुनिया में खुशहाली के लिए आंदोलन चल रहे हैं, सकल राष्ट्रीय खुशी की अवधारणा बनाई गई है। मानव खुशी सूचकांक बनाया गया है। संयुक्त राष्ट्र के स्तर से अंतरराष्ट्रीय खुशी अधिवेशन आयोजित किए जा रहे हैं। 20 मार्च को संयुक्त राष्ट्र द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय खुशी दिवस' घोषित किया गया है तथा इसे मनाया भी जा रहा है। संपूर्ण विश्व में इस विषय पर सर्वे, शोध आदि चल रहे हैं, पुस्तकें लिखी जा रही हैं। भूटान ने इस पर शोध कर पूरी दुनिया में हलचल मचा दी है। कुछ समय पहले भूटान नरेश ने ग्राँस नेशनल हैप्पीनेस का विचार प्रतिपादित कर इस विषय को नूतनता दी है। तो वहीं पश्चिमी देशों में भी 'द वेल बीइंग मूवमेंट्स' चलाए जा रहे हैं जिसमें जनता ने काफी रुचि दिखाई तथा यह काफी सफल भी रहा है। इस विषय पर अंतरराष्ट्रीय लेखकों यथा स्वेट मोर्डन, डेल कारनेगी, शिव खेड़ा, ब्रायन ट्रेसी आदि ने कई पुस्तकें भी लिखी हैं जिससे काफी संख्या में लोग इस ओर प्रेरित हुए हैं।

आज तनाव, चिंता विश्वव्यापी समस्या बन गयी है। इसके कारण शारीरिक तथा मानसिक रूप से लोग व्याधिग्रस्त हो गए हैं। ऐसी परिस्थिति में क्या किया जाए कि लोग खुशगवार महसूस करें? खुशहाली को प्रभावित करने वाले कौन-कौन कारक हैं? इनमें सरकार की क्या भूमिका है, आदि विचारनीय विषय हैं। कारण मानव जीवन का अंतिम ध्येय तो सुख प्राप्ति ही है। जनता को सुख पहुँचाना सरकार का भी दायित्व माना जाता है। हिन्दी साहित्य में भी सुख या खुशी को तलाशा गया है। गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' में राम-राज्य की जो परिकल्पना की गई थी वह सर्वजन की खुशहाली ही थी। आज संपूर्ण विश्व में इसकी तलाश हो रही है। कुछ देशों में तो इस मॉडल पर काम भी चल रहा है। आर्थिक मान्यता 'खुशी का स्रोत धन है, जितना अधिक धन है, उतनी अधिक खुशी है,' ध्वस्त हो रही है। वर्तमान में सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीडीपी) या सकल घरेलू उत्पाद की जगह सकल राष्ट्रीय खुशी की बात चल रही है। कुछ देशों में तो इस पर काम भी चल रहा है। विश्व के कई हिस्सों में वैकल्पिक मॉडल (जो मानवता को खुशी दे सके) पर ज्यादा चिंतन हो रहा है।

जीवन की आपाधापी के बीच खुश रहना लगातार मुश्किल तो होता ही जा रहा है तो कुछ हमने भी अपने कार्यों से इसे उलझा कर रख दिया है। खुशी हमारे आस-पास ही हैं, जरूरी है उसे देखने भर की। हमें जीवन के हर मोड़ पर खुद को और दूसरों को भी खुश या प्रसन्न रखने का प्रयास करते रहना चाहिए। जीवन वहाँ है जहाँ खुशियाँ विद्यमान हो। खुश रहना जीवन का सर्वोत्तम गुण है। इससे न केवल जीवन बल्कि काम-काज में भी

सकारात्मकता बनी रहती है। इसके लिए अपनी दिनचर्या में सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान दिया जा सकता है। खुशियों का मार्ग खुद से ही शुरू होता है। वास्तव में खुश होने के लिए कुछ करने की आवश्यकता नहीं होती, इसके लिए खुशी को महसूस करना होता है। अगर हम खुश रहना चाहते हैं तो हमें अपने नकारात्मक विचारों को सकारात्मक विचारों में बदलना चाहिए। हम जीवन में आनंद का अनुभव केवल तभी कर सकते हैं, जब हमने अपने मन को नियंत्रित करना सीख लिया हो। खुशी हमारे जीवन के सोचने के तरीके पर निर्भर करती है। हम जब भी कोई उत्सव मनाते हैं या कोई संगीत सुनते हैं तो उसका हमारे मन पर खुशनुमा असर पड़ता है। हम भीतर से खुश होने लगते हैं। जब मन चहकता है तो शरीर पर भी असर पड़ता है। ये सांस्कृतिक हिस्सेदारी उन परेशानियों को दूर नहीं कर सकती लेकिन खुशी-खुशी उन्हें दूर करने का माहौल जरूर बना देती है।

खुशी के साथ एक मजेदार बात है कि वह बाहर कहीं नहीं है। बल्कि कस्तूरी की तरह वह हमारे भीतर ही मौजूद है। खुशी की हमारे जिंदगी में अलग अहमियत है। जब हम छोटी-छोटी खुशियों का मजा लेने लगते हैं तो हमारे भीतर कुछ बदलने लगता है। हमारे खुश होने का दायरा बढ़ने लगता है। कभी-कभी किसी को हम छोटी-सी खुशी देते हैं तो हमें अपने भीतर ज्यादा खुशी महसूस होती है। छोटी खुशियों के लिए जिस आत्म-सजगता की जरूरत होती है, उसके लिए अंदर से शांत होना अनिवार्य है। आंतरिक सजगता इसकी जरूरत है। चुप रहने, देखने, सुनने और सजग रहने से हमारी आंतरिक खुशी के दरवाजे खुलते हैं। मन जितना शांत होगा आनंद भी अतना अधिक होगा। अगर हम समर्पित हो कर कार्य में जुटे रहें तो हर चीज की जीवंतता को अपने एहसास में पाएँगे। साथ ही उस आनंद को भी महसूस करेंगे जो प्रकृति के कण-कण में है। आनंद आंतरिक चीज है, जो हममें से ज्यादातर में नहीं के बराबर है। इसका अस्तित्व निराकार है, इसलिए यह अदृश्य भी है। खुशी के लिए छोटी चीजें ही काफी हैं। वास्तव में यह हमारी सोच पर निर्भर करता है। जीवन में हर इच्छा की पूर्ति संभव नहीं है और यह हमें खुशी से दूर करता है। आनंद बाहर की वस्तु नहीं, अपने भीतर की ऊर्जा है। जिस प्रकार मुनष्य के पास अनेक भाषाएँ हैं, अभिनय के गुण हैं, उसी प्रकार उसके पास हँसाने-रूलाने की क्षमता भी है। हमारे पर्व-त्योहार हमें जीना सिखाते हैं। इनसे जीवन-शक्ति अर्जित कर हम अपनी तकलीफें भूलकर एक खुशमिजाज इंसान बन सकते हैं। इसमें पत्रकारिता (मीडिया) द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जा सकती है। सुख की तलाश में नये अर्थों व परिदृश्यों को देखने में पत्रकारिता की भूमिका, सभी नागरिकों व राष्ट्र के सुख के लिए उपयोगी है। पत्रकारित एक रचनाशील विधा है जिसके द्वारा व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र की आदतों तथा सोच को सरलतापूर्वक तथा सहजतापूर्वक बदला जा सकता है। इसका मुख्य कार्य जनता को सूचित, शिक्षित एवं मनोरंजित कर सुख के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना है। सुख या खुशी के नये पैमाने की तलाश करना पत्रकारिता (मीडिया) द्वारा ही संभव है। पत्रकारिता (मीडिया) ही सुख पर हुए नये शोधों को जनसंचारित कर नागरिकों को इस ओर अग्रसर कर सकती है। सुख के हर आयाम या पहलुओं की तलाश में मीडिया की भूमिका प्रभावशाली व अग्रणी रही है। सकल राष्ट्रीय सुख के प्रति जन-जागृति फैलाने का काम मीडिया द्वारा व्यापक स्तर पर किया जा सकता है। पत्रकारिता (मीडिया) द्वारा व्यापक जनसंचार कर लोगों को सकल राष्ट्रीय सुख के विभिन्न आयामों की प्राप्ति में सहयोग मिल सकता है। सरकार को नई नीति बनानी पड़ सकती है।

### निष्कर्ष

अतः यह कहा जा सकता है कि पत्रकारिता एक रचनाशील विधा है। इसके द्वारा समाज की सोच को व्यापक स्तर पर बदला जा

सकता है तथा खुशहाली का संचार किया जा सकता है। पत्रकारिता (मीडिया) सकल राष्ट्रीय सुख का स्रोत है। विश्व में खुशहाली फलाने में पत्रकारिता (मीडिया) की भूमिका उल्लेखनीय है। प्रिंट तथा इलेक्ट्रानिक माध्यमों का दुनिया को खुशहाल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान है। सकल राष्ट्रीय सुख की व्यवस्था क्रियान्वित करने में पत्रकारिता (मीडिया) की महत्ता उत्प्रेरक, उत्साहवर्धक, उपयोगी तथा उत्कृष्ट है।

#### संदर्भ

1. पत्रकारिता: विविध विधाएँ/डॉ० राज कुमारी रानी।
2. जनसंचार एवं पत्रकारिता/विनय कुमार
3. जीवन और सुख/शिवानंद
4. सकारात्मक सोच की शक्ति/नार्मन विसेंट पील
5. आत्म-अनुशासन की शक्ति/ब्रायन ट्रेसी
6. ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस/आर्थर सी ब्रुक्स
7. द साइंस ऑफ हैप्पीनेस/स्टीफन क्लेन
8. द आर्ट ऑफ हैप्पीनेस/दलाई लामा व होवार्ड सी कटलर
9. इंटरनेट सामग्री व अन्य